लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

अमृत विचार

कानपुर नगर

एक सम्पूर्ण अखबार

हर मौसम में हो सकता मशरूम का उत्पादन

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- सीएसए विवि की ओर से किसानों को दिया गया प्रशिक्षण

अमृत विचार। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) की ओर से कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में किसानों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान किसानों को मशरूम की खेती के टिप्स दिए गए। विशेषज्ञों ने कहा कि इसकी खेती कम जगह, कम लागत पर बेहतर लाभ देती है। अब हर मौसम में मशरूम का उत्पादन हो सकता है।

प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिक डॉ निमिषा अवस्थी ने किसानों से कहा कि मशरूम का उपयोग भोजन व औषधि के रूप में किया जाता है। इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण और विटामिन जैसे उच्च स्तरीय खाद्य मूल्य होते हैं। यही वजह है कि देश व विदेश में मशरूम की मांग काफी बढ़ गई है। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार विभिन्न कृषि फसलों को मौसम की अनुकूलता के अनुसार भिन्न-भिन्न ऋतुओं में उगाया जाता है। उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की मशरूम की प्रजातियों के क्रम में हेर-फेर करके किसान पूरे वर्ष मशरूम उत्पादन कर सकते हैं। उत्तरी भारत में मौसमी मशरूम उत्पादक पहले केवल श्वेत बटन मशरूम की एक फसल लेने के बाद अपने उत्पादन कार्य को बंद कर देते थे। गर्मियों में तापमान में वृद्धि के कारण वर्ष भर मशरूम उत्पादन कार्य जारी नहीं रख पाते हैं। कुछ मशरूम उत्पादक ढींगरी मशरूम के एक-दो फसलें लेने का प्रयास करते हैं। यदि मशरूम उत्पादक दूधिया मशरूम को वर्तमान फसल चक्र में शामिल कर लें तो अपने मशरूम उत्पादन काल को बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा वर्ष भर मशरूम उत्पादन करके स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं

मौसम
अधिकतम तापमान 33.c
27.c न्यूनतम तापमान
बाजार
सोना 73.840g
चांदी 87.000 kg
सेंसेक्स 81,053.19

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

यूपी मैसेंजर

जनता की आवाज

04 संकट के दौर से गुजरती भाजपा, अब विपक्ष के झूठे-सच्चे विमर्श पर सत्तापक्ष देता है प्रतिक्रिया और सफाई

स्त्री 2 के बाद इन फिल्मों में जलवा

वर्ष :10 अंक :207 लखनऊ से प्रकाशित लखनऊ , गुरूवार 29 अगस्त 2024 पृष्ठ : 08

कृषि विज्ञान केंद्र ने कराया मशरूम उत्पादन तकनीकी प्रशिक्षण

यूपी मैसेंजर संवादाता

कानपुर, सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की गृह वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी ने बताया कि मशरूम का उपयोग भोजन व औषधि के रूप में किया जाता है। प्रोटीन, काबोर्हाइड्रेट, खनिज लवण और विटामिन जैसे उच्च स्तरीय खाद्य मूल्यों के कारण मशरूम सम्पूर्ण विश्व में अपना एक विशेष महत्व रखता है। कुछ वर्षों में किसानों का रुझान मशरूम की खेती की तरफ तेजी से बढ़ा है, मशरूम की खेती बेहतर आमदनी का जरिया बन सकती है। अलग-अलग राज्यों में किसान मशरूम की खेती से अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं, कम जगह और कम समय के साथ ही इसकी खेती में लागत भी बहुत कम लगती है, जबकि मुनाफा लागत से कई गुना ज्यादा मिल जाता है। इसी क्रम में आज 28 अगस्त को कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर, कानपुर देहात द्वारा दो दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ ग्राम गोपाल नगर विकासखंड रसूलाबाद में किया गयो कार्यक्रम में बोलते हुए गृह वैज्ञानिक डॉ निमिषा अवस्थी ने कहा कि जिस प्रकार विभिन्न कृषि फसलों को मौसम की अनुकूलता के अनुसार भिन्न-भिन्न ऋतुओं में उगाया जाता है। उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की मशरूम की प्रजातियों के क्रम में हेर-फेर करके किसान भाई पूरे वर्ष मशरूम उत्पादन कर सकते हैं। उत्तरी भारत में मौसमी मशरूम उत्पादक पहले केवल श्वेत बटन मशूरूम की एक फसल लेने के बाद अपने उत्पादन कार्य को बंद कर देते थे तथा गर्मियों में तापमान में वृद्धि के कारण वर्ष

भर मशरूम उत्पादन कार्य जारी नहीं रख पते हैं। कुछ मशरूम उत्पादक ढींगरी मशरूम के एकझ्दो फसलें लेने का प्रयास करते हैं । यदि मशरूम उत्पादक दूधिया मशरूम को वर्तमान फसल चक्र में शामिल कर लें तो अपने मशरूम उत्पादन काल को बढ़ा सकते हैं तथा वर्ष भर मशरूम उत्पादन करके स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। डॉ खलील खान ने बताया उत्तर भारत के मैदानी भागों में श्वेत बटन मशरूम को शरद ऋतु में अक्टूबर से फरवरी तक, ग्रीष्मकालीन श्वेत बटन मशरूम को सितंबर से नवंबर व फरवरी से अप्रैल तक ढींगरी का उत्पादन किया जा सकता है कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए डॉ राजेश राय ने कहा भारत जैसे विकासशील देश की पोषण सुरक्षा हेतु दैनिक आहार में मशरूम को सम्मिलित करना अति आवश्यक है। कार्यक्रम में सहयोगी ग्राम विकास संस्थान के बदन सिंह, के साथ गोपालपुर के 35 से अधिक महिला पुरुष कृषकों ने प्रतिभाग कियो कार्यक्रम में ढिंगरी मशरूम उत्पादन का विधि प्रदर्शन भी किया गयो शुभम यादव ने सहयोग किया

सत्य का असर समाचार पत्र

29th August 2024 Mobile no 9956834016

सत्य का असर समाचार पत्र पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कृषि विज्ञान केंद्र ने कराया मशरूम उत्पादन तकनीकी प्रशिक्षण

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की गृह वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी ने बताया कि मशरूम का उपयोग भोजन व औषधि के रूप में किया जाता है। प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण और विटामिन जैसे उच्च स्तरीय खाद्य मूल्यों के कारण मशरूम सम्पूर्ण विश्व में अपना एक विशेष महत्व रखता है। कुछ वर्षों में किसानों का रुझान मशरूम की खेती की तरफ तेजी से बढ़ा है, मशरूम की खेती बेहतर आमदनी का जरिया बन सकती है। अलग-अलग राज्यों में किसान मशरूम की खेती से अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं, कम जगह और कम समय के साथ ही इसकी खेती में लागत भी बहुत कम लगती है, जबकि मुनाफा लागत से कई गुना ज्यादा मिल जाता है। इसी क्रम में आज 28 अगस्त को कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर, कानपुर देहात द्वारा दो दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ ग्राम गोपाल नगर विकासखंड रसूलाबाद में किया गया| कार्यक्रम में बोलते हुए गृह वैज्ञानिक डॉ निमिषा अवस्थी ने कहा कि जिस प्रकार विभिन्न कृषि फसलों को मौसम की अनुकूलता के अनुसार भिन्न – भिन्न ऋतुओं में उगाया जाता है। उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की मशरूम की प्रजातियों के क्रम में हेर – फेर करके किसान भाई पूरे वर्ष मशरूम उत्पादन कर सकते हैं। उत्तरी भारत में मौसमी मशरूम उत्पादक पहले केवल श्वेत बटन मशूरूम की एक फसल लेने के बाद अपने उत्पादन कार्य को बंद कर देते थे तथा गर्मियों में तापमान में वृद्धि के कारण वर्ष भर मशरूम उत्पादन कार्य जारी नहीं रख पते हैं। कुछ मशरूम उत्पादक ढींगरी मशरूम के एक – दो फसलें लेने का प्रयास करते हैं । यदि मशरूम उत्पादक दूधिया मशरूम को वर्तमान फसल चक्र में शामिल कर लें तो अपने मशरूम उत्पादन काल को बढ़ा सकते हैं तथा वर्ष भर मशरूम उत्पादन करके स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। डॉ खलील खान ने बताया उत्तर भारत के मैदानी भागों में श्वेत बटन मशरूम को शरद ऋतु में अक्टूबर से फरवरी तक, ग्रीष्मकालीन श्वेत बटन मशरूम को सितंबर से नवंबर व फ़रवरी से अप्रैल तक ढींगरी का उत्पादन किया जा सकता है | कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए डॉ राजेश राय ने कहा भारत जैसे विकासशील देश की पोषण सुरक्षा हेतु दैनिक आहार में मशरूम को सम्मिलित करना अति आवश्यक है। कार्यक्रम में सहयोगी ग्राम विकास संस्थान के बदन सिंह, के साथ गोपालपुर के 35 से अधिक महिला पुरुष कृषकों ने प्रतिभाग किया| कार्यक्रम में ढिंगरी मशरूम उत्पादन का विधि प्रदर्शन भी किया गया| शुभम यादव ने सहयोग किया |

प्रदेश के कृषि विज्ञान केंद्रों एवं कृषि संस्थाओं में होगा वृक्षारोपण महाअभियान

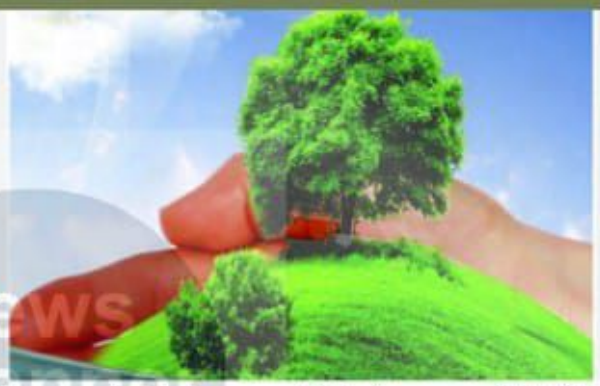

आईसीएआर अटारी जोन 3 कानपुर के निदेशक डॉक्टर शांतनु कुमार दुबे ने बताया कि भारत के मा.प्रधान मंत्री जी ने 5 जून 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वैश्विक अभियान *एक पेड़ मां के नाम* लॉन्च किया। उन्होंने बताया कि वैश्विक अभियान के रूप में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने बताया कि प्रयास किए जा रहे हैं कि सितंबर 2024 तक देश भर में 80 करोड़ पौधे और मार्च 2025 तक 140 करोड़ पौधे लगाए जाएं। डा . दुबे ने बताया कि उत्तर प्रदेश में 89 कृषि विज्ञान केंद्र संचालित हैं। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 20 जून, 2024 को असोला भाटी वन्यजीव अभयारण्य में वृक्षारोपण गतिविधि शुरू की।जिसमें व्यक्तियों ने अपनी माताओं के सम्मान में पेड़ लगाए। अभियान के एक भाग के रूप में, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय 29 अगस्त 2024 को मा. कृषि मंत्री, भारत सरकार की गरिमामय उपस्थिति में *एक पेड़ माँ के नाम* अभियान का आयोजन कर रहा है। कार्यक्रम के तहत, मंत्रालय आईएआरआई परिसर में लगभग 1 एकड़ भूमि में "मातृ वन" स्थापित करेगा जहां कृषि मंत्री और मंत्रालय के अधिकारी/कर्मचारी पौधे लगाएंगे। वृक्षारोपण कार्यक्रम 29 अगस्त 2024 को सुबह 10:00 बजे IARI परिसर, पूसा, नई दिल्ली में शुरू होगा। देश में डीए एंड एफडब्ल्यू, आईसीएआर संस्थानों, सीएयू, केवीके और एसएयू के सभी अधीनस्थ कार्यालयों को भी उसी दिन और समय पर अपने-अपने स्थानों पर इसी तरह का वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए सूचित किया जाता है। कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के तहत 800 से अधिक संस्थानों के भाग लेने की उम्मीद है जहां आयोजन के दौरान 3000-4000 पौधे लगाए जाएंगे।*एक पेड़ माँ के नाम अभियान एक जन आंदोलन है और लोग पेड़ लगाकर अपनी माँ और धरती माँ के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए भाग ले रहे हैं। पेड़ लगाने से सरकार द्वारा शुरू किए गए मिशन लाइफ का उद्देश्य भी पूरा होता है जो पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवन शैली का एक जन आंदोलन है। कृषि में, टिकाऊ खेती हासिल करने के लिए पेड़ उगाना एक महत्वपूर्ण कदम है। पेड़ मिट्टी, पानी की गुणवत्ता में सुधार और जैव विविधता को बढ़ाकर कृषि उत्पादकता में सुधार करने में मदद करते हैं। पेड़ किसानों को लकड़ी और गैर-लकड़ी उत्पादों से अतिरिक्त आय का स्रोत भी प्रदान करते हैं। इस अभियान में भूमि को रोकने और उलटने की अपार संभावनाएं हैं |

ोदय सूर्यास्त
.34 05.12
धिकतम न्यूनतम
.0° 15.0°
ना ₹ 62,710
दी ₹ 78,500

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 16 अंक : 59 कानपुर, गुरूवार 29 अगस्त 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

कृषि विज्ञान केंद्र ने कराया मशरूम उत्पादन तकनीकी प्रशिक्षण

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की गृह वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी ने बताया कि मशरूम का उपयोग भोजन व औषधि के रूप में किया जाता है प्रोटीन कार्बोहाइड्रेट खनिज लवण और विटामिन जैसे उच्च स्तरीय खाद्य मूल्यों के कारण मशरूम सम्पूर्ण विश्व में अपना एक विशेष महत्व रखता है। कुछ वर्षों में किसानों का रुझान मशरूम की खेती की तरफ तेजी से बढ़ा है, मशरूम की खेती बेहतर आमदनी का जरिया बन सकती है। अलग-अलग राज्यों में किसान मशरूम की खेती से अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं, कम जगह और कम समय के साथ ही इसकी खेती में लागत भी बहुत कम लगती है, जबकि मुनाफा लागत से कई गुना ज्यादा मिल जाता है। इसी क्रम में आज 28 अगस्त को कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर, कानपुर देहात द्वारा दो दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ ग्राम गोपाल नगर विकासखंड रसूलाबाद में किया गया7 कार्यक्रम में बोलते हुए गृह वैज्ञानिक डॉ निमिषा अवस्थी ने कहा कि जिस प्रकार विभिन्न कृषि फसलों को मौसम की अनुकूलता के अनुसार भिन्न-भिन्न ऋतुओं में उगाया जाता है। उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की मशरूम की प्रजातियों के क्रम में हेर-फेर करके किसान भाई पूरे वर्ष मशरूम उत्पादन कर सकते हैं। उत्तरी भारत में मौसमी मशरूम उत्पादक पहले केवल श्वेत बटन मशूरूम की एक फसल लेने के बाद अपने उत्पादन कार्य को बंद कर देते थे तथा गर्मियों में शरद ऋतु में अक्टूबर से फरवरी तक, ग्रीष्मकालीन श्वेत बटन मशरूम को सितंबर से नवंबर व फ़रवरी से अप्रैल तक ढींगरी का उत्पादन किया जा सकता है 7

तापमान में वृद्धि के कारण वर्ष भर मशरूम उत्पादन कार्य जारी नहीं रख पते हैं। कुछ मशरूम उत्पादक ढींगरी मशरूम के एकद्धदो फसलें लेने का प्रयास करते हैं । यदि मशरूम उत्पादक दूधिया मशरूम को वर्तमान फसल चक्र में शामिल कर लें तो अपने मशरूम उत्पादन काल को बढ़ा सकते हैं तथा वर्ष भर मशरूम उत्पादन करके स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। डॉ खलील खान ने बताया उत्तर भारत के मैदानी भागों में श्वेत बटन मशरूम को कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए डॉ राजेश राय ने कहा भारत जैसे विकासशील देश की पोषण सुरक्षा हेतु दैनिक आहार में मशरूम को सम्मिलित करना अति आवश्यक है। कार्यक्रम में सहयोगी ग्राम विकास संस्थान के बदन सिंह, के साथ गोपालपुर के 35 से अधिक महिला पुरुष कृषकों ने प्रतिभाग किया7 कार्यक्रम में ढिंगरी मशरूम उत्पादन का विधि प्रदर्शन भी किया गया7 शुभम यादव ने सहयोग किया।

अमर भारती
एक उम्मीद
संस्करण
मूल्यः 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com गुरुवार, 29 अगस्त 2024 शक सम्वत् 1946,

कृषि विज्ञान केंद्र ने कराया मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण

कानपुर (अमर भारती)। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की गृह वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी ने बताया कि मशरूम का उपयोग भोजन व औषधि के रूप में किया जाता है। प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण और विटामिन जैसे उच्च स्तरीय खाद्य मूल्यों के कारण मशरूम सम्पूर्ण विश्व में अपना एक विशेष महत्व रखता है। कुछ वर्षों में किसानों का रुझान मशरूम की खेती की तरफ तेजी से बढ़ा है, मशरूम की खेती बेहतर आमदनी का जरिया बन सकती है। अलग-अलग राज्यों में किसान मशरूम की खेती से अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं, कम जगह और कम समय के साथ ही इसकी खेती में लागत भी बहुत कम लगती है, जबकि मुनाफा लागत से कई गुना ज्यादा मिल जाता है। इसी क्रम में आज 28 अगस्त को कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर, कानपुर देहात द्वारा दो दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ ग्राम गोपाल नगर विकासखंड रसूलाबाद में किया गया7 कार्यक्रम में बोलते हुए गृह वैज्ञानिक डॉ निमिषा अवस्थी ने कहा कि जिस प्रकार विभिन्न कृषि फसलों को मौसम की अनुकूलता के अनुसार भिन्न-भिन्न ऋतुओं में उगाया जाता है। उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की मशरूम की प्रजातियों के क्रम में हेर-फेर करके किसान भाई पूरे वर्ष मशरूम उत्पादन कर सकते हैं। उत्तरी भारत में मौसमी मशरूम उत्पादक पहले केवल श्वेत बटन मशूरूम की एक फसल लेने के बाद अपने उत्पादन कार्य को बंद कर देते थे तथा गर्मियों में तापमान में वृद्धि के कारण वर्ष भर मशरूम उत्पादन कार्य जारी नहीं रख पते हैं। कुछ मशरूम उत्पादक ढींगरी मशरूम के एक-दो फसलें लेने का प्रयास करते हैं । यदि मशरूम उत्पादक दूधिया मशरूम को वर्तमान फसल चक्र में शामिल कर लें तो अपने मशरूम उत्पादन काल को बढ़ा सकते हैं तथा वर्ष भर मशरूम उत्पादन करके स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। डॉ खलील खान ने बताया उत्तर भारत के मैदानी भागों में श्वेत बटन मशरूम को शरद ऋतु